NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत का बढ़ता चालू खाता घाटा (CAD)

www.nextias.com

वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत का बढ़ता चालू खाता घाटा (CAD)

संदर्भ

- भारत विश्व के साथ लगातार तीसरे वर्ष *भुगतान संतुलन घाटा* की ओर अग्रसर प्रतीत होता है।

चालू खाता घाटा (CAD) क्या है?

- चालू खाता किसी देश और विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं, आय एवं अंतरणों के लेन-देन को दर्ज करता है।
- जब किसी देश का कुल आयात (वस्तुएँ, सेवाएँ और अंतरण) उसके निर्यात से अधिक होता है, तब चालू खाता घाटा उत्पन्न होता है।
  - यदि कुल *आउटफ्लो* (निकासी) *इनफ्लो* (प्रवाह) से अधिक हो, तो CAD होता है।
- यह बाहरी असंतुलन को दर्शाता है और इंगित करता है कि देश विश्व से शुद्ध उधारकर्ता है।
- **चालू खाते के घटक**
  - **व्यापार संतुलन:** (निर्यात – आयात)
  - **सेवाएँ:** (आईटी, पर्यटन आदि)
  - **आय:** (ब्याज, लाभांश)
  - **अंतरण:** (रेमिटेंस)

भारत के CAD में हालिया प्रवृत्तियाँ

- IMF ने भारत का CAD $84.46 बिलियन अनुमानित किया है, जो दो दशकों में सबसे अधिक में से एक है।
- यह 2012 के संकट काल (~$87.84 बिलियन) के तुलनीय है।
- भारत लगातार तीसरे वर्ष *भुगतान संतुलन घाटा* का सामना कर सकता है।
- CAD घरेलू अस्थिरता से नहीं, बल्कि बाहरी कारकों (तेल कीमतों) से प्रेरित है।

भारत में CAD बढ़ने के कारण

- **कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें:** भारत लगभग 85% कच्चा तेल आयात करता है, जिससे आयात बिल बढ़ता है और व्यापार घाटे में वृद्धि होती है।
  - तेल मूल्य अनुमान $82–85/बैरल (IMF एवं RBI) तक बढ़े।
- **उच्च आयात निर्भरता:** ऊर्जा (तेल, गैस), सोना और इलेक्ट्रॉनिक्स का आयात। तीव्र आर्थिक वृद्धि से आयात की मांग निर्यात से तीव्रता से बढ़ती है।
- **निर्यात वृद्धि में मंदी:** वैश्विक मंदी से भारतीय निर्यात की मांग घटती है। संरचनात्मक समस्याएँ जैसे कम विनिर्माण प्रतिस्पर्धा और सीमित निर्यात क्षेत्रों पर निर्भरता।
- **कमज़ोर पूंजी प्रवाह:** CAD को वित्तपोषण हेतु FDI, FPI और बाहरी उधारी की आवश्यकता होती है।
  - वैश्विक अनिश्चितता से निवेशक जोखिम-निरपेक्ष हो जाते हैं तथा पूंजी प्रवाह घटता है।
- **वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता:** भू-राजनीतिक तनाव, मुद्रास्फीति और विकसित अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक सख्ती से व्यापार मांग एवं पूंजी प्रवाह घटता है।

- **मुद्रा अवमूल्यन:** रुपये का अवमूल्यन आयात (विशेषकर तेल) की लागत बढ़ाता है, जिससे व्यापार घाटा और CAD खराब होता है।
- **विकास-आयात संबंध:** *थिर्लवाल का नियम* अनुसार, तीव्र GDP वृद्धि से आयात बढ़ता है। यदि निर्यात समान रूप से न बढ़े तो CAD चौड़ा होता है।

CAD की स्थिरता क्या है?

- **CAD-से-GDP अनुपात:**
  - पूर्व सीमा (रंगराजन समिति, 1993): GDP का 1.6%
  - वर्तमान सहमति: GDP का 2–2.5% स्थायी है।
  - भारत का CAD लगभग GDP का 2% अनुमानित है, जो प्रबंधनीय सीमा में है।
- **अंतर-कालिक उधारी:** यदि आज उधार ली गई राशि भविष्य में वृद्धि और पुनर्भुगतान क्षमता लाती है तो CAD स्थायी है।
- **शुद्ध विदेशी देनदारियाँ:** स्थिर बाहरी ऋण-से-GDP अनुपात बनाए रखना आवश्यक है।
- **समायोजन जोखिम:** अस्थायी CAD से मुद्रा का तीव्र अवमूल्यन, उच्च ब्याज दरें और आर्थिक मंदी हो सकती है।

नीतिगत उपाय एवं आगे की राह

- **अल्पकालिक:**
  - ऊर्जा आयात का विविधीकरण और रणनीतिक भंडार को बढ़ावा देना।
  - स्थिर पूंजी प्रवाह को प्रोत्साहित करना।
  - विनिमय दर अस्थिरता का प्रबंधन करना।
- **दीर्घकालिक:**
  - निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना (PLI योजनाएँ, विनिर्माण प्रोत्साहन)।
  - आयात निर्भरता कम करना (विशेषकर ऊर्जा क्षेत्र में)।
  - सेवाओं के निर्यात को सुदृढ़ करना (आईटी, डिजिटल अर्थव्यवस्था)।

निष्कर्ष

- भारत का बढ़ता CAD घरेलू कमजोरी से अधिक वैश्विक आघातों को दर्शाता है।
- यदि निर्यात प्रदर्शन में सुधार और आयात निर्भरता में कमी नहीं होती, तो सतत बाहरी असंतुलन वृद्धि को सीमित कर सकते हैं। वर्तमान स्तर हालांकि प्रबंधनीय सीमा में हैं।

स्रोत: LM

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में बढ़ते चालू खाता घाटा (CAD) के कारणों पर चर्चा कीजिए तथा इसकी स्थिरता का परीक्षण कीजिए। बाह्य क्षेत्र की कमजोरियों को प्रबंधित करने हेतु नीतिगत उपाय सुझाइए।